तृतीय प्रश्नपत्र

तृतीय भाग में, भारतीय दर्शन है जिसमें सांख्य योग एवं अद्वेते वेदान्त का सामान्य परिचय है।

संस्कृत वाड्मय, दार्शनिक तत्वचिन्तन के लिये, सदा विश्वविश्रुत रहा है। विभिन्न दृष्टियो से दार्शनिक तत्वो पर विचार करने के लिये, भारत भूमि पर, अनेक दार्शनिक विधाओ का जन्म हुआ है। प्रायः सभी दर्शन, दार्शनिक तत्वो के चिन्तन मे, सजग दिखाई देते है।

दर्शन शब्द का अर्थ– दर्शन शब्द हश धातु से, करण अर्थ में, ल्युट् अन प्रत्यय लगकर, निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है जिसके द्वारा देखा जाये हश्यतेडनेनेति दर्शनम्। देखने का साधन हमारी नेत्रेन्द्रिय है। अतः नेत्रो के द्वारा देखना ही दर्शन है। यह दर्शन का गौण अर्थ है, जो यहां अभिप्रेत नहीं है। यहां हश् धातु का अर्थ प्रेक्षण है और प्रेक्षण का तात्पर्य है प्रकृष्ट रूप में देखना। अतः आत्म तत्व की खोज करना, ज्ञान दृष्टि या दिव्य दृष्टि से अपने अपने मतानुसार समझना, देखना ही, दर्शन के अर्न्तगत आता है।

प्राचीन काल में हमारे तत्ववेत्ता, ऋषि मुनियो ने, अपने अपने मतानुसार, आत्मतत्व तथा परमतत्व का, सूक्ष्म निरीक्षण किया, तथा उनका यह आत्मचिन्तन ही, विभिन्न दर्शनो के रूप में आर्विभूत हुआ।

भारतीय दर्शन, अमृत की वह नदी है, जिसकी अनेक पवित्र विचार धारायें, विभिन्न दर्शनो के रूप में, भारत भूमि पर, प्रवाहित हो रही है। आस्तिक तथा नास्तिक के भेद से, दर्शन के दो वर्गो में विभाजित किया गया है। नास्तिको वेद निन्दक इस कथन के अनुसार वेद को प्रमाण न मानने वाले, वेद निन्दक, नास्तिक दर्शन कहे जाते है। नास्तिक दर्शनो के अन्तर्गत तीन दर्शन आते है– चार्वाक दर्शन, जैन दर्शन, और बौद्ध दर्शन। आस्तिक दर्शन छः है– सांख्य,योग,न्याय,वैशेषिक, पूर्वमीमांसा, उत्तर– मीमांसा वेदान्त 1– सांख्य योग में ईश्वर को छोडकर, शेष सभी विचार एक है। अतः यह दोनो एक ही कोटि मे रखे जा सकते है। 2– न्याय वैशेषिक का कालकम से एकीभाव हो जाने के कारण ये दोनो भी एक कोटि में रखे जा सकते है। 3– मीमांसा वस्तुत एक ही दर्शन है परन्तु उसकी दो शाखाए है– पूर्वमीमांसा अर्थात् कर्मकाण्ड और उत्तरमीमांसा अर्थात् वेदान्त दर्शन

समस्त भारतीय दर्शनो का उददेश्य एक ही है। संसार के प्राणियो की दुःख त्रय से निवृत्ति एवं आत्मचिन्तन से परमानन्द की प्राप्ति। दुःख त्रय है 1– आध्यात्मिक दुःख 2– आधिभौतिक दुःख 3– आधिदैविक दुःख। सांख्य कारिका की प्रथम कारिका है–

दुःखत्रयाभिघतृाद् जिज्ञासा तद्पधातके हेतुः।

दृष्टे सा पार्था चेन्नैकान्ता तान्तयाडभावाद्।।

<u>सांख्य दर्शन–</u> इस दर्शन में प्रकृति तथा पुरूष दो मुख्य तत्वो के साथ अन्य 23 तत्वो की गणना की गई है, इसलिये इसका नाम सांख्य पड़ा क्योकि सांख्य दर्शन में तत्वो की संख्या 25 है, इसलिये महामुनि कपिल के दर्शन का नाम सांख्य पड़ा।

<u>योग दर्शन–</u> योग की परिभाषा है योगश्चित्त वृत्तिर्निरोध जब चित्त की वृत्ति को चारो तरफ से एकाग्र करके, अर्थात् चित्तवृत्ति को शून्य करके परमात्मा में मिला देना तद्रूप हो जाना यही योग है।

सांख्य दर्शन ईश्वर को नही मानता निरोश्वरवादी है। योग दर्शन ईश्वर की सत्ता को मानता है, योगसत्र में कहा गया है– तस्य वाचक प्रणव अर्थात ओम शब्द ईश्वर का बोध करता है।

अद्वेते वेदान्त– वेदान्त शब्द का अर्थ है वेद का अन्त। वेद का अन्तिम भाग होने के कारण उपनिषदो को वेदान्त कहा जाता है। अर्थात् वेदो में जो दार्शनिक विचार पाये जाते हैं उनकी चरमावस्था उपनिषदो में प्रतिफलित दिखाई देती है। उपनिषदो में अध्यात्म विद्या विषयक, विचारधारा का सम्यक विवेचन हुआ है और उसका संगठित रूप वेदान्त दर्शन में उपलब्ध होता है।

अद्वेते वेदान्त के अनुसार परम तत्व ब्रहम है। वही एकमात्र सत् है उससे भिन्न जगत् की सभी वस्तुएं असत् है। यह जगत उस ब्रहम का विवर्त है। यह जगत माया का परिणाम है। शंकराचार्य के अनुसार यह माया सत् और असत् से परे अनिर्वचनीय है। इस माया की आवरण और विक्षेप दो शक्तियां है। ब्रहम के वास्तविक स्वरूप को ढकने वाली शक्ति को आवरण शक्ति कहते है। विक्षेप का अर्थ है वस्तु के यथार्थ स्वरूप पर अन्य वस्तु का आरोप करना। माया भी अपने से आच्छादित आत्मा में विक्षेप शक्ति के द्वारा आकाशादि जगत् प्रपंच को उत्पन्न करती है।

तर्कसंग्रह

श्री अन्नभट् द्वारा रचित तर्क संग्रह प्रारम्भ से लेकर प्रत्यक्ष प्रमाण तक पाठ्यकम में है। प्रारम्भ में सात पदार्थ गए है जो है, द्रव्य,गुण,कर्म,सामान्य,विशेष,समवाय तथा अभाव।

द्रव्य नौ होते है। गुण 24 होते है। कर्म 5 प्रकार के होते है। सामान्य 2 प्रकार के। विशेष अनन्त। समवाय 1 तथा अभाव के 4 भेद होते है।

ज्ञान दो प्रकार का होता है यथार्थ तथा अयथार्थ। यथार्थ ज्ञान ही प्रमा कहलाता है अयथार्थ ज्ञान अप्रमा अर्थात् भ्रम कहलाता है। यथार्थ अनुभव के चार भेद है– प्रत्यक्ष, अनुमिति, उपमिति तथा शब्द। उसके कारण भी चार है प्रत्यक्ष, अनुमान उपमान तथा शब्द।

प्रत्यक्ष– इन्द्रिय तथा अर्थ के सन्निकर्ष से उत्पन्न ज्ञान, प्रत्यक्ष कहलाता है। जो निर्विकल्पक तथा सविकल्पक दो प्रकार का होता है। प्रत्यक्ष ज्ञान का हेतु इन्द्रिय तथा अर्थ का सन्निकर्ष, 6 प्रकार का होता है। संयोग, संयुक्त समवाय, संयुक्त समवेत समवाय, समवाय, समवते समवाय, विशेषण विशेष्य भाव।

इस प्रकार इन्द्रिय तथा अर्थ के सन्निकर्ष से उत्पन्न ज्ञान प्रत्यक्ष प्रमाण कहलाता है।

छ. शा.जी. म. विश्वविद्यालय, कानपुर
आरोह तमसो ज्योति
C.S.J.M. UNIVERSITY, KANPUR